P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

-जैन आश्रम में समागत उत्तराखंड के राज्यपाल माननीय श्री अजीज कुरैशी जी पूज्यवर के साथ विचार विमर्श करते हुए।

-संसद-भवन में माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीराकुमार के साथ गुरूकुल के बच्चे। अन्य हैं संसद भवन के सचिव, उपसचिव तथा श्री अरूण तिवारी।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
जनवरी, 2013

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

-मानव मंदिर मिशन के 31वें वार्षिक समारोह में उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी।
-समारोह में उपस्थित विशाल जन-समुदाय की झलकियाँ।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 13 अंक : 01 जनवरी, 2013

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.info
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 13
06 गीतिका - 15
07. विचार-मंथन - 16
08. कहानी - 18
09. चुटकुले - 19
10. स्वास्थ्य - 20
11. बोलें-तारे - 22
12. समाचार दर्शन - 24
13. संवेदना-सम्बल - 31
14. झलकियां - 32

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार

श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

आर्ष-वाणी

लालयेत् पंचवर्षाणि, दश वर्षाणिताडयेत्।
प्राप्तेतु षोड़शे वर्षे, पुत्रमित्रवत् आचरेत्।।

(नीतिवाक्य)

बच्चों का पांच वर्षों तक स्नेह प्यार से पालन करना चाहिए। पांच वर्षों के बाद दश वर्षों तक ताड़ना डांटना भी यथोचित करनी चाहिए ताकि बालक में बुरी आदतें न आए। बच्चा सोलह वर्षों का हो जाए तब उसके साथ मित्र का सा व्यवहार करना चाहिए।

बोध-कथा

सच्चा गुरु

एक व्यक्ति श्रेष्ठ गुरू की तलाश में था। एक दिन उसने अपनी यह समस्या अपने मित्र को बताई। मित्र ने कहा- 'यह कौन सी बड़ी बात है। इसकी पहचान मैं करा दूंगा। तुम्हें जिस व्यक्ति को गुरू बनाना हो उसके पास मुझे ले चलो। मैं उसकी परीक्षा लेकर बता दूंगा कि वह गुरू बनने योग्य है या नहीं।'

मित्र ने इसके लिए एक नायाब तरीका अपनाया। वह जिस किसी के पास जाता, अपने साथ पिंजरे में एक कौवा ले जाता। मित्र महात्मा से पूछता, 'महाराज, यह पिंजरे में कबूतर ही है न?' इस बात को सुनकर कुछ लोग हंस पड़ते और उसका उपहास करने लग जाते। कई नाराज हो जाते और कहते, 'तुम जैसे मूर्खों से तो बात करना ही बेकार है।'

कई साधु-संन्यासियों से मिलने के बाद आखिर दोनों मित्र एक महात्मा के पास पहुंचे। उसने फिर पहले की तरह ही कहा- 'महात्मा जी, यह कबूतर ही है न।' इस पर महात्मा जी तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। वह शांत भाव से बोले- 'नहीं बेटे, यह कबूतर नहीं कौवा है।' मित्र पूर्ववत उसे कबूतर साबित करने पर तुल गया। लेकिन तब भी उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया।

फिर उन्होंने उसे प्यार से समझाया, कौवे और कबूतर के लक्षण बताए और कहा- 'देखो कि पिंजरे में बंद पक्षी के लक्षण किससे मिलते हैं। अब तुम ही तय करो कि यह क्या है? अगर फिर भी समझ में नहीं आए तो चलो मैं तुम्हें जंगल में ले चलता हूं और विभिन्न पक्षियों की पहचान करवाता हूं।'

दूसरे मित्र ने पहले मित्र को कोने में ले जाकर कहा- 'गुरु हो सकते हैं। जो व्यक्ति दूसरों को सिखाने में रुचि ले और इस क्रम में अपना धैर्य न खोये, वही सच्चा गुरु हो सकता है। इन्होंने मेरा उपहास नहीं किया, न ही मुझ पर क्रोधित हुए क्योंकि इनके भीतर अपार धैर्य तो है ही, किसी व्यक्ति की गलती को सुधारने की सदिच्छा भी है।'

शाश्वत स्वर

वरदान ही नहीं, वरदान का सही उपयोग भी जरूरी

मशहूर शायर 'शुजाअ' खावर का एक शेर है-

'शुजाअ' मौत से पहले जरूर जी लेना,
ये काम भूल न जाना बड़ा जरूरी है।

शायर मौत से पहले जीने की बात कर रहा है। क्या मौत से पहले भी कोई मरता है? इसके बावजूद जैसी जिंदगी हम जीते हैं, क्या वो काबिले-तारीफ मानी जा सकती है? क्या हम अपनी जिंदगी को बेहतर और जिम्मेदार तरीके से नहीं जी सकते? जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं, जब हम उनका सही इस्तेमाल करके न केवल अपने जीवन को अधिक आनंदमय बना सकते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी नई दिशा दे सकते हैं। लेकिन हम वर्तमान को पूरी तरह जीने की अपेक्षा अपने और अपने वारिसों के अनिश्चित भविष्य को सुखमय बनाने के जुगाड़ में ही लगे रहते हैं। और कई बार वर्तमान को दुखदायी बना लेते हैं।

एक बार एक व्यक्ति ने घोर तपस्या करके भगवान को प्रसन्न कर लिया। भगवान ने उसे वर दिया कि जीवन में एक बार सच्चे मन से जो चाहोगे वही हो जाएगा। उस व्यक्ति के जीवन में अनेक अवसर आए, जब वह इस वरदान का इस्तेमाल कर अपने जीवन को सुखी बना सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कई बार भूखों मरने की नौबत आई, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। अनेक अवसर आए जब वह वरदान का प्रयोग कर समाज को खुशहाल बना सकता था, लेकिन उसने ऐसा भी नहीं किया। वह उस अवसर की तलाश में था जब मौत आएगी और वह अपने वरदान का इस्तेमाल कर अमर हो जाएगा और दुनिया को दिखा देगा कि अपने वरदान का उसने कितनी बुद्धिमता से इस्तेमाल किया है। लेकिन मौत तो किसी को सोचने का अवसर देती नहीं। उसने चुपके से एक दिन उसे आ दबोचा। उस का वरदान धरा का धरा रह गया।

हम लोगों के पास अवसरों की कमी नहीं होती। जो सक्षम और समर्थ हैं उनके तो कहने ही क्या हैं? किसी के पास धन-दौलत के भंडार हैं, तो किसी के पास सत्ता की ताकत है। किसी के पास ज्ञान का आगार है, तो कोई बाहुबल में बहुत आगे है। कोई कठोर संयम का पालन करने वाला है, तो कोई अत्यंत संवेदनशील और दयालु। ये सब मामूली स्थितियां नहीं हैं।

ये स्थितियां वरदान से किसी भी तरह कम नहीं हैं। पैसे को ही लीजिए। पैसे से क्या नहीं हो सकता? कहीं पैसों का अंबार लगा है, लेकिन पैसों के अभाव में कोई भूखा मरने का विवश है, तो कोई बिना दवा के बीमारी में दम तोड़ने को अभिशप्त है। न जाने कितने लोगों की भुजाओं में अपरिमित बल है, लेकिन इसके बावजूद अनेकानेक लोग अरक्षित और शोषित हैं। ऐसे बाहुबल का क्या फायदा जो कमजोर की रक्षा न कर सके? सत्ता की ताकत क्या नहीं कर सकती? इससे देश को खुशहाल बनाया जा सकता है। शोषितों को, मजलूमों को शोषण से मुक्त किया जा सकता है।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

चिंतन की गंगा में

जीवन में आगे बढ़ने के लिए किसी न किसी विश्वास की जरूरत होती है। विश्वास ही सम्बल होता है विचलन की घड़ियों में। पर प्रश्न होता है किस पर विश्वास? इसे समझना बहुत जरूरी है। क्योंकि आदमी अक्सर इसी दो-राहे पर भटक जाता है। सही विश्वास जहां ठीक लक्ष्य की ओर ले जाता है, गलत विश्वास उम्र-भर के लिए भटका देता है।

विश्वास का निर्णय करते समय अक्सर हम दूसरे पर विश्वास कर लेते हैं। विश्वास के नाम पर किसी पंथ या संप्रदाय को पकड़ लेते हैं, गुरु के नाम पर किसी व्यक्ति-विशेष से बंध जाते हैं। परिणाम स्पष्ट है। वे व्यक्ति या सम्प्रदाय अक्सर उस श्रद्धा और विश्वास का शोषण करते हैं।

हर महापुरुष ने आदमी से कहा- तुम अपने पर विश्वास करो। भगवान बुद्ध ने कहा- **अप्प दीवो भव-आत्म-दीपो भव,** स्वयं दीपक बनो। भगवान महावीर ने कहा- **अप्पणा सच्च मेसेज्जा-आत्मना सत्यं एषयेत्-** अपने से सत्य की खोज करो। सत्य को पाना अपने को पाना है। अपने को पाना सत्य को पाना है। अपने को खोना सत्य को खोना है। सत्य को खोना अपने को खोना है। इसलिए तुम अपने से जुड़ो।

हम और सबसे जुड़ जाते हैं, किन्तु अपने से कहां जुड़ पाते हैं? जगने से लेकर सोने तक, पत्नी से जुड़े हैं, परिवार से जुड़े हैं, मित्रों से जुड़े हैं। धन से जुड़े हैं, नौकरी से जुड़े हैं, व्यापार से जुड़े हैं, किन्तु अपने से कहां जुड़े हैं? जागृत अवस्था में तो अपने से जुड़े हैं ही नहीं, नींद में भी अपने में कहां होते हैं। सपनों के बहाने बाहर-बाहर ही भटकते रहते हैं।

व्यस्तता-बहुल इस जीवन में अपने से जुड़ने के क्षण भी उपलब्ध कहां हैं? यदि सौभाग्य से वैसे क्षण मिल भी जाएं, फिर भी हम अपने से कहां जुड़ना चाहते हैं? रेडियो, टी.वी. 'ऑन' करके किसी गाने से किसी पिक्चर से अपने को जोड़ देते हैं। किन्तु उन क्षणों में भी हम अपने साथ कहां होते हैं?

बहुत कठिन है अपने आमने-सामने होना। परिवार और समाज के आमने-सामने खड़ा होना आसान है हजारों की क्रुद्ध भीड़ के आमने-सामने होना भी आसान है, किन्तु अपने ही सामने खड़ा होना बहुत कठिन है।

प्रभु के द्वारे
प्रार्थनाएं करता रहा उम्र भर
पर अपने को अलग रखकर
कोई प्रार्थना नहीं कर सका
जीवन रण में
डटकर सामना किया भीड़ का
किन्तु एकान्त में
कभी अपना सामना नहीं कर सका।

बड़ा मुश्किल है अपना सामना करना। भगवान महावीर ने कहा- लाखों योद्धाओं पर विजय पाना सरल है, कठिन है अपने पर विजय प्राप्त करना। वीर वह है जो अपने पर विजय प्राप्त कर ले।

यह कठिन क्यों है? क्योंकि हमें स्वयं पर ही विश्वास नहीं है। हमारा धन पर विश्वास है कि यह समय पर काम आयेगा। मित्र परिवार पर विश्वास है कि ये समय पर काम आयेंगे। जबकि हम अच्छी तरह से जानते हैं। कि समय पर अपना विश्वास ही काम आता है। दूसरे भी तभी काम आते हैं जब अपना आत्म-विश्वास अटल होता है। अपना आत्म-विश्वास अगर हिल जाए तो दूसरे तो हिले हुए हैं ही।

कहा जाता है भगवान पर विश्वास करो। पर है कहां भगवान? अपने भीतर ही तो है। हर धर्म-सम्प्रदाय कहता है, परमात्मा तुम्हारे अन्दर है, फिर भगवान पर विश्वास करने का मतलब यही है कि हम अपने पर विश्वास करें। जिस दिन अपने पर विश्वास हो जायेगा, भगवान पर अपने आप हो जायेगा। जिसका अपने पर विश्वास नहीं, उसका अवतार, तीर्थंकर, पैगम्बर पर विश्वास कैसे हो सकेगा?

हर महापुरुष ने आदमी के आत्म-विश्वास को जगाने की कोशिश की है। वह आत्म-विश्वास हमारे भीतर जगे, हम अपने पर विश्वास करना सीखें। जिस दिन हम अपने से जुड़ गए परमात्मा से स्वयं जुड़ जायेंगे। जिस दिन हम अपने से जुड़ गए, पूरे संसार से स्वयं जुड़ जायेंगे।

2

आज सबसे गम्भीर सवाल है कि चरित्र कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा है। न व्यक्ति का कोई चरित्र रह गया है, न समाज का अपना कोई चरित्र है और न राष्ट्रीय चरित्र जैसा भी कुछ नजर आ रहा है।

राष्ट्रीय जीवन में चरित्र के मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए सरकार नित नए कानून बना रही है। व्यक्तिगत चरित्र को उन्नत बनाने के लिए धर्म-जगत से दिन रात प्रयास हो रहे हैं, किन्तु स्थिति यह है सारे उपदेश निरर्थक साबित हो रहे हैं, सारे कानून इस दिशा में प्रभावहीन नजर आ रहे हैं।

क्या कारण है इसका? इस धर्म-प्रधान देश में चरित्र की यह दुरवस्था क्यों? जिस देश में चरित्र का पाठ सदियों से लोगों को रटाया जा रहा है, वह चरित्र से इतना कमजोर क्यों? पश्चिम देशों में जहां न इतने सन्त हैं, न इतने पंथ हैं और न ही इतने ऊंचे-ऊंचे ग्रन्थ हैं, वहां का भी नैतिक स्तर इतना गिरा हुआ नहीं है। फिर गौरव-मण्डित इस देश की आज यह हालत क्यों?

अतीत में हमारे देश का चरित्र अत्यन्त उन्नत व समुज्जवल रहा। इसका प्रमुख कारण हमारी आस्था का केन्द्र-बिन्दु धर्म था। जो व्यक्ति, समाज व शासन की परवाह नहीं करता, तब वह भी धर्म के नियमों के समक्ष नत-मस्तक हो जाता। धर्म की व्यवस्था व्यक्ति, समाज और राज्य के लिए लक्ष्मण रेखा होती।

धीरे-धीरे यह धर्म-व्यवस्था शिथिल होने लगी। इसका प्रमुख कारण स्वयं सम्प्रदायवाद था। और भी कुछ कारण बने। किन्तु परिणाम उसका यही हुआ कि धर्म आस्था-केन्द्र से च्युत हो गया। राज व्यवस्था प्रमुख पद पर आसीन हो गई।

राज-व्यवस्था के केन्द्र में राष्ट्र होता है। जिससे राष्ट्र को नुकसान होता है, वह कार्य न किया जाए। व्यक्ति का कोई भी ऐसा आचरण न हो, जिससे राष्ट्र पुरुष की प्रतिमा पर आंच आए। पश्चिम के नैतिक आचरण का मुख्य आधार यही राष्ट्रवाद है। कहते हैं एक भारतीय अपने जापानी मित्र का अतिथि बना। वह जापानी डेयरी-फार्म चलाता था। एक दिन किसी कारणवश उसके पास दूध कम पड़ गया। अपने ग्राहकों तक पूरा दूध नहीं पहुंचा पाने की उसके मन में चिंता थी। भारतीय मित्र ने कहा- इसमें चिंता की क्या बात है, जितना दूध कम पड़ रहा है, उतना पानी मिला दीजिए। यह सुनते ही जापानी बन्धु आग-बबूला हो उठा। वह बोला तुम मुझे मेरे देश के साथ धोखा करने का परामर्श दे रहे हो? दूध में पानी मिलाकर क्या मैं अपने देश का स्वास्थ्य खराब करूंगा? यह कहते हुए उसने अपने भारतीय मित्र को तत्काल घर छोड़ देने के लिए कहा।

आज एक भारतीय दूध में पानी आराम से मिला सकता है। दूध में पानी की मिलावट तो आज कुछ भी नहीं। वनस्पति घी में गाय और सूअर की चर्बी तक मिलाई जा रही है।

ग्लूकोज की जगह पानी भर-भर कर इंजेक्शन बाजार में बिकने को जा रहे हैं। खाद्यान्न में मिलावट है, घी तेल में मिलावट है, सीमेण्ट-लोहे में मिलावट है जीवन-दान देने वाली दवाओं में भी मिलावट है। कहावत तो यहां तक चल पड़ी है कि जहर भी इस देश में शुद्ध नहीं मिलता। इस मुहावरे का इतना ही अर्थ है कि भ्रष्टाचार इस देश में यहां तक बढ़ गया है कि कोई भी व्यक्ति यहां पर आराम से न जी सकता है और न मर सकता है।

इस चरित्रहीनता का एक ही कारण है कि यहां मनुष्य की आस्था के केन्द्र में आज न धर्म है, न राष्ट्र है। इस देश का आस्था-केन्द्र आज पैसा है। केवल पैसा ही पैसा। पैसे की ही प्रतिष्ठा है, पैसे का ही सर्वत्र सम्मान है। यदि पास में पैसा नहीं फिर चाहे लाख योग्यताएं हों, कहीं सम्मान नहीं, प्रतिष्ठा नहीं। यदि पास में पैसा है, फिर चाहे कोई योग्यता न हो, समाज का हर सम्मान उसके लिए उपलब्ध है। इस स्थिति में परिवर्तन आना जरूरी है। जब तक इसमें परिवर्तन नहीं आता है, चरित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा असंभव है।

चरित्रहीनता का रोग न कानून से ठीक होगा, न कोरे उपदेशों से ठीक होगा। इसका एक ही इलाज है- हमारी आस्था को व्यापक आधार मिले। व्यक्ति, परिवार ओर समाज से ऊपर है राष्ट्र। राष्ट्रीय मूल्यों की प्रतिष्ठा से छोटे-छोटे स्वार्थ स्वयं नीचे रह जायेंगे। राष्ट्र से भी ऊपर है धर्म। धर्म की प्रतिष्ठा से राष्ट्रीय उन्माद भी समाप्त हो जायेगा। हम अपने से अधिक महत्व परिवार को दें, परिवार से अधिक महत्व समाज को दें, समाज से अधिक महत्व राष्ट्र को दें, तो चारित्रिक मूल्यों की गिरावट स्वयं रुक जाएगी। धर्म का मूल्य राष्ट्र से भी ऊपर है, जहां जाति, सम्प्रदाय और राष्ट्र की दीवारें भी टूट जाती हैं। भारतीय चिंतन ने उन्हीं मानवीय मूल्यों को अपने आस्था-केन्द्र में रखा। विश्व बन्धुत्व का स्वप्न केवल इसी भूमिका पर संभव है।

3

मैं सोचता हूं धर्म को केवल परलोक के साथ जोड़कर धर्म-जगत ने भारी भूल की है। धर्म को केवल परलोक के साथ जोड़ने का परिणाम यह हुआ कि धर्म का असली प्रयोजन तिरोहित हो गया और धर्म केवल स्वर्ग-सुखों के प्रलोभन एवं नरक-दुःख के भय से जुड़ गया। हम धर्म का आचरण करें ताकि हमें स्वर्ग-सुखों की प्राप्ति हो। हम अधर्म आचरण नहीं करें ताकि हमें नरक के दुःखों की प्राप्ति न हो।

हर धर्म-प्रवर्तक ने धर्म को जीवन से जोड़ा, किन्तु धर्म-परम्पराओं ने उसे स्वर्ग और नरक से जोड़ दिया। यहीं धर्म अपने असली केन्द्र से विचलित हो गया।

धर्म का मूल केन्द्र वर्तमान है, न भूत, न भविष्य। हम वर्तमान क्षण को कैसे जियें, धर्म का सारा दर्शन इसी पर टिका है। वर्तमान विषम है तो भविष्य भी विषम होगा। वर्तमान यदि सम है तो भविष्य भी सम होगा। वर्तमान यदि सुखमय है तो भविष्य भी सुखमय होगा, वर्तमान यदि दुःखमय है तो भविष्य भी दुःखमय होगा। भविष्य वैसा होगा, जैसा हमारा वर्तमान है। इसलिए धर्म का असली प्रयोजन वर्तमान को सजाने-संवारने का है।

उस केन्द्रीय विचार से भटक जाने के कारण धर्म भूत और भविष्य में उलझ गया। वर्तमान को उसने बिल्कुल ही भुला दिया। इसलिए लोगों ने वर्तमान को केवल अतीत का परिणाम मान लिया। भाग्यवाद की विचारधारा का जन्म हुआ। भाग्य को बदला नहीं जा सकता, इसलिए वे वर्तमान से विमुख हो गए और भविष्य की चिन्ता में पड़ गए। जिसके पास कोठी, मोटर-कार, टी.वी. आदि सुख-सुविधाओं के साधन हैं, वे अतीत के पुण्य के परिणाम हैं, ऐसा मान लिया गया। जो वैभव सम्पन्न नहीं है, वे जप-तप में इसलिए लगे हैं ताकि भविष्य में वे भी साधन सम्पन्न बन सकें। धर्म का पूरा उदेश्य ही बदल गया। जो आत्म-केन्द्रित था, वह वस्तु-केन्द्रित हो गया। जो वस्तु-विमुख था, वह वस्तु सम्मुख बन गया और इसी विचार के फलस्वरूप धर्म के नाम पर व्यापार और सौदेबाजी चलने लगी।

जहां भी प्रलोभन है वहां धर्म नहीं है। जहां भी भय है वहां धर्म नहीं है। भय और प्रलोभन का धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिये यह विचार पूरी तरह गलत है। धर्म है आत्म उज्जवलता का साधन। धर्म है सोई हुई शक्तियों के पुनर्जागरण का उपादान। धर्म है आत्म-स्वभाव में रमण। धर्म ही आत्म शान्ति और विश्व शान्ति का एकमात्र साधन धर्म है, वर्तमान जीवन को आनन्दपूर्ण बनाने का गुर। भगवान महावीर ने कहा- आत्मा ही नरक है, आत्मा में ही स्वर्ग है, आत्मा में ही बन्धन है, आत्मा में ही मोक्ष है। जिसके भीतर नरक नहीं, उसके लिए बाहर कहीं भी नरक नहीं। जिसके भीतर स्वर्ग नहीं, उसके लिये बाहर कहीं भी स्वर्ग नहीं। जिसके भीतर कहीं बन्धन नहीं, उसके लिए बाहर कहीं बन्धन नहीं, जिसके भीतर मोक्ष नहीं, उसके लिए बाहर कहीं भी मोक्ष नहीं। इसलिए महावीर ने भीतर पर जोर दिया, हम बाहर पर जोर दे रहे हैं। बाहर के स्वर्ग और नरक की चिन्ता में उलझे हुए हैं।

इसी चिन्तन का दुष्परिणाम यह हुआ, बाहर से तप-जप चल रहे हैं, पूजा-पाठ चल रहे हैं, किन्तु इधर छल-कपट, झूठ भी चल रहे हैं, शोषण और संग्रह भी चल रहा है, राग-द्वेष, घृणा, ईर्ष्या भी चल रहे हैं। यानि धर्म करते हुए भी जीवन में कोई परिवर्तन नहीं है, कोई क्रान्ति नहीं है। बिना क्रांति के शान्ति सम्भव ही नहीं है।

क्रान्ति केवल वर्तमान में ही घटित हो सकती है। वह भूत और भविष्य में कहीं सम्भव नहीं है। इसलिये हम अपने को वर्तमान से जोड़ें। वर्तमान को सजाएं-संवारें। वर्तमान को संगीतमय बनाएं। वर्तमान को आनन्दमय बनायें। यही धर्म है, यही समस्त धर्म-ग्रंथों का सार है।

अगर हमारा जीवन आनन्दमय है तो हम देखेंगे, सारे स्वर्ग-सुख हम पर उतर आएंगे। अगर हमारा जीवन आनन्दमय नहीं है तो सारे नरक-दुःख भी हम पर उतर आएंगे। स्वर्ग-नरक सब कुछ हमारे पर निर्भर हैं।

धर्म को जीवन से जोड़े, वर्तमान से जोड़े, हमको उसी क्षण फल मिलेगा। यदि हम क्षमा से भरे हैं, हमारा जीवन शान्तिमय होगा। यदि हम प्रेम और अहिंसा से भरे हैं, हमारा जीवन आनन्दमय होगा। यदि क्रोध से भरे हैं तो हमारा जीवन अशान्ति और तनाव से भर जायेगा। यदि ईर्ष्या-घृणा-राग-द्वेष से हम भरे हैं तो हमारा जीवन दुख और विषाद से भर जाएगा। घर को स्वर्ग बनाएं, बाहर स्वर्ग ही स्वर्ग है। घर यदि नरक है तो बाहर स्वर्ग मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता।

4

कहते हैं एक बार सागर किनारे रहने वाला एक मेंढक घूमते-घामते एक कुंए में पहुंच गया। वहां पीढ़ियों से एक मेंढक रहता था। कुंए के मेंढक ने अपने सजातीय बन्धु से पूछा- कहां से आ रहे हो? उसने उत्तर दिया- समुद्र के किनारे से। कितना बड़ा है तेरा सागर? अगला प्रश्न था। उसने कहा- बहुत बड़ा। कुएं में मेंढक ने एक छलांग भरी और पूछा- इतना बड़ा है? फिर उत्तर मिला, बहुत बड़ा है इससे। इस बार कुएं के इस पार से उस पार तक छलांग भरते हुए पूछा- क्या इतना बड़ा है नहीं बहुत बड़ा है इससे भी। कुएं में मेंढक ने झल्लाते हुए कहा- चल, तू झूठ बोलता है, इससे बड़ा कोई समुद्र हो ही नहीं सकता।

हम उस कुएं के मेंढक की नादानी पर हंसेंगे। किन्तु सोचना यह है कि वैसी नादानी कहीं हम तो नहीं कर रहे हैं। हमारा ज्ञान क्या कुएं-सा क्षुद्र ही नहीं है? किन्तु हमारा अहंकार क्या सागर-सा विशाल नहीं है? जिसका ज्ञान कुएं-सा, अहंकार हो सागर-सा, उसे समझाया जाये तो भी कैसे समझाया जाये? उस अहंकार को तोड़ने का एक ही उपाय है, भीतर के अज्ञान को तोड़ा जाये। अहंकार सदा अज्ञान में ही होता है। ज्ञान में कभी अहंकार नहीं होता। ज्यों-ज्यों ज्ञान का विस्तार होता है, अज्ञान हटता है। ज्यों-ज्यों अज्ञान हटता है, अहंकार स्वयं टूटता चला जाता है।

-क्रमशः

धर्म का उद्देश्य

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

क्रिया एक ही होती है, पर उसके उद्देश्य भिन्न-भिन्न होते हैं। जो क्रिया जिस उद्देश्य से की जाएगी, उसका परिणाम भी वैसा ही आएगा।

धर्म करने वालों का भी सबका समान उद्देश्य नहीं होता। कुछ लोग इहलौकिक समृद्धि के लिए धर्म करते हैं। तो कुछ लोग पारलौकिक सुख-सम्पत्ति के लिए धर्माचरण करते हैं। कतिपय लोग पूजा, प्रतिष्ठा, श्लाघा, प्रशंसा, कीर्ति के लिए धार्मिक क्रियाकांडों में समय लगाते हैं। इस प्रकार के हल्के उद्देश्यों से किया जाने वाला धर्म महत् परिणाम नहीं लाता। वस्तुतः तो वह धर्म की कोटि में परिगणित ही नहीं होता।

एक बार एक महात्मा एक धार्मिक व्यक्ति की खोज में निकले। उनको एक प्रवचन पंडाल में ले जाया गया, जहां एक गुरुजी उपदेश फरमा रहे थे और श्रोतागण सुन रहे थे। महात्मा ने कहा- 'यहां धोखा-धड़ी है, यहां धर्म नहीं हो सकता।' आगे बढ़ गए। एक स्थान पर कीर्तन हो रहा था। बोल पड़े, 'यहां प्रदर्शन है। प्रदर्शन और धर्म में कोई तालमेल नहीं है।' इसके बाद महात्माजी को एक यज्ञ-बाड़े में ले जाया गया, जहां पर नाना प्रकार की आहूतियां दी जा रही थीं। महात्मा ने कहा- 'यहां सौदा है। धर्म में कभी सौदा नहीं होता, वह तो सर्वथा अनासक्त भाव से किया जाता है।'

महात्माजी निराश होकर लौट रहे थे कि उन्हें जंगल में एक व्यक्ति दिखाई दिया जो ध्यानस्थ खड़ा था, जिसको एक काला नाग काट रहा था, फिर भी शान्त-मौन, समता-लीन।

महात्मा को लगा, यह व्यक्ति वस्तुतः धार्मिक है- कितना निस्पृह और अनासक्त है। कितना सहज और कामना-शून्य है। इसमें न प्रदर्शन है, न किसी प्रकार की आकांक्षा, न दूसरों को ठगने की मनोवृत्ति, न भोग है, न त्याग का अभिमान। न ममकार है, न अहंकार। न आसक्ति है, न इच्छा। केवल सहजता और शान्ति। यहां है धर्म का मूर्त रूप। यह है धर्म का ज्वलन्त उदाहरण।

यह किसी परम्परा पर कटाक्ष नहीं है, किसी धर्म विशेष पर व्यंग्य नहीं है और न ही किसी सम्प्रदाय विशेष का अपमान। लेकिन सच्चाई है।

धर्म जितना बाह्य क्रियाकांड़ों पर निर्भर नहीं करता, उतना ही आन्तरिक भावनाओं पर आधारित रहता है। धर्म के साथ न कोई शर्त है और न कोई सौदेबाजी ही। धर्म अपने आप में एक स्वतंत्र और निरपेक्ष घटना है। धर्म के साथ चमत्कार को जोड़कर धर्म का अस्तित्व ही खतरे में डाल दिया जाता है। जहां धर्म से चामत्कारिक घटना घट गई वहां धर्म की जय-जयकार हो गई और जहां धर्म से कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ, कोई चमत्कार नहीं घटा, वहां धर्म की धज्जियां उड़ाई जाती हैं।

किसी भी वस्तु के प्रति अतिरिक्त धारणा बनाना आस्था नहीं, अंधविश्वास है। अंध-श्रद्धा वाले व्यक्ति जितनी जल्दी आस्थाशील होते हैं उतनी ही जल्दी श्रद्धा को डुबाने वाले भी। ऐसी श्रद्धा वाले व्यक्तियों ने धर्म को जितना विकृत और बदनाम किया है उतना नास्तिकों ने भी नहीं किया।

लोग अकसर कहते हुए सुने जाते हैं कि हमारा धर्म इतना अधिक शक्तिशाली है कि उसके प्रभाव से उलटती हुई ट्रेन रुक गई, गिरती हुई बिजली से बचाव हो गया। हमारे इष्टदेव ने हमें अमुक-अमुक खतरों से बचा लिया अमुक आपत्तियों को निरस्त कर दिया, जबकि ये सब घटनाएं अनायास स्वाभाविक ढंग से घटती है।

जो व्यक्ति अच्छे का श्रेय अपने धर्म या धर्म-गुरु को देता है वह बुरे का दोषारोपण भी इन्हीं पर कर देगा। जीवन में छिटपुट घटनाएं घटते ही उसकी सारी आस्था क्षणों में विलीन हो जाएगी। संसार में जो कुछ भी अच्छा या बुरा घटता है, अपने कर्मों के अनुसार और नियति का प्रबलता से घटता है। धर्म को उसके साथ भागीदार बनाना, यह उसके साथ न्यायसंगत नहीं होगा।

धर्म का उद्देश्य नितान्त आध्यात्मिक होना चाहिए। जिस व्यक्ति में जिस कार्य की क्षमता है उससे वही कार्य कराया जा सकता है, दूसरा नहीं। अमृत अमृत का ही कार्य कर सकेगा, बिष का कभी नहीं।

चाहे धर्म में अनन्त क्षमताएं हैं पर भौतिक सिद्धियों और उपलब्धियों की क्षमता उसमें नहीं है क्योंकि उसका गुण ही दूसरा है। इसलिए धर्म को प्रलोभन और भय का केन्द्र नहीं मानना चाहिए।

एक बुढ़िया एक हाथ में जलता लैम्प और दूसरे हाथ में पानी का घड़ा लिये बाजार बीच घूम रही थी। लोगों ने उससे पानी के घड़े और जलते लैम्प के बारे में पूछा तो उसने बताया कि लैम्प तो रखती हूं स्वर्ग में आग लगाने के लिए और पानी का घड़ा रखती हूं नरक की आग बुझाने के लिए। लोगों ने आतुरता से कहा- 'बुढ़िया! स्वर्ग में आग लगाने

और नरक की आग बुझाने से तुम्हें क्या मिलेगा?' उसने कहा- 'बन्धुओ! मेरे ऐसा करने से धर्म-क्रिया का विकृत रूप सदा के लिए खत्म हो जाएगा। क्योंकि जो लोग स्वर्ग के प्रलोभन और नरक के भय से धर्म करते हैं उनके लिए प्रलोभन ओर भय का कोई कारण नहीं रहेगा। उनका धर्म सर्वथा निस्पृह भाव से होगा।' सुनने वाले स्तब्ध थे बुढ़िया की बुद्धिमत्ता पर।

सचमुच प्रलोभन और भय-बिहीन धर्म से ही यथार्थ परिणाम आने वाला है।

गीतिका

-साध्वी मंजुश्री

आओ-2 प्रभु जी मेरे सूनी रे नगरिया,
सूख रही है मन की बगिया बरसो बन बदरिया।

मानव जन्म मिला पुण्यों से, करने निज कल्याण है,
मोह माया में उलटा फँस कर भूल गया भगवान है,
सही दिशा बतलाओ तेरी कौन सी डगरिया।

महल बना मिट्टी चूने का, मूर्ख कहे घर मेरा है,
श्वास रूके यह हंस उड़ेगा, होगा पर भव डेरा है,
छोड़ चलेगा इक दिन अपनी, ऊँची रे अटरिया।

सत्संग में कभी न आया, नहीं प्रभु का नाम लिया,
धन वैभव में फँसकर तूने, अमृत तज विषपान किया,
धो नहीं पाया अब तक मन की, मैली रे चदरिया।

जन्म-2 की मैं दुखियारी, दर्शन दो अन्तर्यामी,
पल-पल ध्यान लगाऊँ प्रभु में, ऐसी शक्ति दो स्वामी,
बून्द-2 से भर दो खाली, मंजू की गगरिया।

तर्ज- नगरी-2 द्वारे-2

विचार-मंथन

पुण्य करने में देरी न करें

एक प्रश्न मन को बार-बार झकझोरता है कि गुणों की सुगंध को हवा उतनी तेजी के साथ औरों तक क्यों नहीं पहुंचाती जितनी तेजी के साथ दुर्गुणों की दुर्गंध को फैलाव दे जाती है? यह जिज्ञासा मेरी ही नहीं अनेक लोगों की है, जो जीवन मूल्यों की महत्ता को महसूस करते हैं और उसे व्यापक बनाना चाहते हैं। अक्सर देखने में आता है कि महान लोगों को जीवन मूल्यों की पहचान हुई और पता चला कि उन्हें अच्छाइयों के लिए एक लम्बा सफर तय करना पड़ा। जबकि बुराइयां तो हर मोड़ पर हाथ मिलाने को तैयार रहती है।

वे लोग जो दुनिया बदलना चाहते हैं या जिन्होंने दुनिया बदली है हमेशा परम्परा से हटकर चले हैं और उनकी सोच परम्परा से हटकर रही है। वे लोग जिन्होंने आपकी जिंदगी और जीवनशैली को बदल दिया है उनकी सफलताएं आपकी स्वीकृति में छिपी है। वे आत्माएं जिनके जीवन में अमृत के प्याले छलकते हैं, वह सब अमृत आप सबके भीतर से संचित किया हुआ है। हम सब जब किसी महान आदमी या किसी महानता के निमित्त हैं तो फिर हम स्वयं महान क्यों नहीं बन सकते?

इसका कारण हो सकता है कि विफलता का भय हो। जो लोग जोखिम उठाना नहीं चाहते, भीतर में समाये अमृत से रू-ब-रू नहीं हो सकते। जरूरी है हम स्वयं को इस रूप में तैयार करें कि आने वाली चुनौतियों से न डरें। आशंकाओं से किस तरह पेश हो सकते हैं। इसकी तैयारी करें। ऐसा करके हम सफल हो सकते हैं, महान हो सकते हैं। अक्सर हम खुद के भय से ज्यादा भयभीत रहते हैं। इसके लिए ताबीज की नहीं, तजबीज की जरूरत है। स्वयं के द्वारा स्वयं के देखने की जरूरत है। सोच को संकल्प बनाने की जरूरत है। फिर देखिए किस तरह जिदंगी का जादू जग उठेगा।

एक प्रश्न स्वयं से पूछिए कि आप अपने साथ अच्छी चीजें घटित होने की संभावनाओं को कैसे और क्यों रोक रहे हैं। किस्मत तो हर इंसान के दरवाजे खटखटाती है लेकिन तब तक आपके कैसे आयेगी, जब तक कि आप दरवाजा खोलकर उसे अंदर नहीं आने देते?

बुद्ध ने कहा- 'पुण्य करने में जल्दी करो, कहीं आप पुण्य का विश्वास ही न खो दे।' महावीर ने कहा- 'जागो, प्रमाद मत करो, क्योंकि प्रमाद में कृत-अकृत का विवेक ही खो जायेगा। उन्होंने कहा सोए मन की ऊर्जा का अपव्यय होता है, उपयोग नहीं। इसलिए सोए से जागना जरूरी है। सोए से जागने के कुछ तरीके हो सकते हैं जैसे- अपनी जिंदगी के किसी भाग्यशाली या स्वर्णिम अवसर को याद करें जो देने की क्रिया से उपजा था। संभव है जिस समय आपने देने के लिए हाथ बढ़ाया था उस समय यह न उपजा हो। बहुत समय व्यतीत हो जाने के बाद यह घटित हुआ हो। इसका घटित होना आपकी जिंदगी को कुछ नया अनुभव, नयी उम्मीद, नयी संभावनाएं दे गया हो।

दूसरे लोगों का प्यार भरा और उदार व्यवहार स्वीकार कीजिए। क्योंकि दूसरे लोगों के मन में भी देने की इच्छा होती है। जिस तरह देने में सुख है उसी तरह लेने में भी सुख की मानसिकता को विकसित कीजिए। क्योंकि किस्मत बनाने के लिए आपको ग्रहणशील और सहज-स्वाभाविक होने की जरूरत है। जब कोई आपकी तारीफ करे तो आप शुक्रिया कहें, उससे इनकार न करें। कुछ लेने को लेकर अपराधी न महसूस करे, उसका आनंद उठाएं।

नया वर्ष हो या नई सुप्रभात हर दिन को इस संकल्प के साथ शुरू कीजिए कि आप कम से कम दिन में एक ऐसी चीज करेंगे जो किसी और को सुकून देगी। किसी की तारीफ कीजिए, किसी मित्र के लिए फूल ले जाइए, किसी को जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी सफलता पर शुभकामनाएं दीजिए, जब कहीं बाहर खाना खाने जाएं तो सामान्य से थोड़ा अधिक टिप दीजिए। अगर आप किसी बड़े प्रतिष्ठान में उच्च पद पर हैं या आपका स्वयं कोई बड़ा व्यापार है तो साथ काम करने वाले व्यक्ति की अच्छाई को, उसके किसी अच्छे कार्य को देखकर धन्यवाद दीजिए और उस कार्य का उसे श्रेय दीजिए। जीवन निर्माण की शुरुआत ऐसे ही छोटे-छोटे उपक्रमों से हो सकती है।

विकास का ग्राफ उठता-गिरता रहता है, क्योंकि आदमी स्वयं द्वारा स्वयं की पहचान में बहुत बार छला जाता है। मनुष्य के आस-पास विकास के अनेक स्वर्णिम अवसर करवटें लेते रहते हैं मगर वह न पहचान पाता है, न पकड़ पाता है।

उसके पास चेतना है, शक्ति है, प्रयोग की क्षमता है। फिर भी वैयक्तिक कुछ ऐसी दुर्बलताएं होती हैं कि दृष्टिकोण गलत हो जाता है। मिथ्या सोच उभर जाती है। प्रमाद, अज्ञान, असत् संस्कार विघ्न बनकर खड़े हो जाते हैं।

परिस्थितियों का बहाना दुर्बल मनोवृत्तियों वाले लोग करते हैं। जिनमें काम करने का दृढ़ निश्चय होता है, वे इन्हीं चौबीस घंटों में महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पादित कर देते हैं जिन्हें करने के लिए दूसरे लोग परिस्थितियों को बहाना बनाकर अपनी कमियों पर पर पर्दा डालते हैं। अतः वैयक्तिक दुर्बलताओं से और परिस्थितिजन्य विवशताओं से ऊपर उठना ही विकास की सार्थकता है।

विकास को गति मिलती है आत्मनिरीक्षण से। जो व्यक्ति अपने चारों ओर पहरेदारी देता है, वह बुराइयों की घुसपैठ नहीं होने देता। उसका हर सपना सत्य में ढलता है। इसलिए जरूरी है कि बीते कल को ईमानदारी से पुनः जीएं। हम कहां खड़े हैं? कहां सही और गलत है? गलत की समीक्षा करें। सही को और आगे अवसर दें।

अतीत से सबक लेना उतना ही जरूरी है जितना भविष्य में नया करने की सोच। विकास की ऊंचाइयां छूने के लिए हमें सीढ़ियां लगानी होंगी और वे सीढ़िया हैं- 'मैं कुछ होना चाहता हूं' इस संकल्प से शुरू होकर 'मैं हूं मेरा भाग्य-विधाता' इस विश्वास तक पहुंचाना है।

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

कहानी

अतिथि सत्कार का प्रभाव

महाभारत काल की बात है। कुरुक्षेत्र में मुद्गल नाम के एक श्रेष्ठ ऋषि रहते थे। वे सत्यनिष्ठ, धर्मात्मा और जितेन्द्रिय थे। क्रोध व अहंकार उनमें बिल्कुल नहीं था। जब खेत से किसान अनाज काट लेते और खेत में गिरा हुआ अन्न भी चुन लेते, तब उन खेतों में बचे-खुचे दाने मुद्गल ऋषि अपने लिए एकत्र कर लेते थे।

कबूतर की भांति वे थोड़ा सा अन्न एकत्र करते और उसी से अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। पधारे हुए अतिथि का सत्कार भी उसी अन्न से करते, यहां तक कि पूर्णमासी तथा अमावस्या के श्राद्ध तथा आवश्यक हवन भी वे सम्पन्न करते थे। महात्मा मुद्गल एक पक्ष (पन्द्रह दिन) में एक दोने भर अन्न एकत्र कर लाते थे। उतने से ही देवता, पितर और अतिथि आदि की पूजा-सेवा करने के बाद जो कुछ बचता था, उससे परिवार का काम चलाते थे।

महर्षि मुद्गल के दान की महिमा सुनकर महामुनि दुर्वासाजी ने उनकी परीक्षा करने का निश्चय किया। उन्होंने पहले सिर घुमाया, फिर फटे वस्त्रों के साथ पागलों-जैसा वेश बनाए हुए, कठोर वचन बोलते मुद्गल जी के आश्रम में पहुंचकर भोजन मांगने लगे। महर्षि मुद्गल ने अत्यन्त श्रद्धा के साथ दुर्वासा जी का स्वागत किया। उनके चरण धोये, पूजन किया और फिर उन्हें भोजन कराया। दुर्वासाजी ने मुद्गल के पास जितना अन्न था, वह सब खा लिया तथा बचा हुआ जूठा अन्न अपने शरीर में पोत लिया। फिर वहां से उठकर चले आए।

इधर महर्षि मुद्गल के पास भोजन को अन्न नहीं रहा। वे पूरे एक पक्ष में दोने भर अन्न एकत्र करने को जुट गए। जब भोजन के समय देवता और पितरों को भाग देकर वैसे ही वे निवृत हुए, महामुनि दुर्वासा पूर्व की तरह कुटी में आ पहुंचे और फिर भोजन करके चले गए। मुद्गल जी पुनः परिवार सहित भूखे रह गए।

एक-दो बार नहीं, पूरे छः माह तक इसी प्रकार दुर्वासा जी आते रहे। प्रत्येक बार वे मुनि मुद्गलजी का सारा अन्न खाते रहे। मुद्गलजी भी उन्हें भोजन कराकर फिर अन्न के दाने चुनने में लग जाते थे। उनके मन में क्रोध, खीज, घबराहट आदि का स्पर्श भी नहीं हुआ। दुर्वासाजी के प्रति भी उनका आदर-भाव पहले की भांति ही बना रहा।

महामुनि दुर्वासा आखिर में प्रसन्न होकर कहने लगे- ''महर्षि! विश्व में तुम्हारे समान ईर्ष्या व अहंकार रहित अतिथि सेवा कोई नहीं है। क्षुधा इतनी बुरी होती है कि वह मनुष्य

के धर्म-ज्ञान व धैर्य को नष्ट कर देती है, लेकिन वह तुम पर अपना प्रभाव तनिक भी नहीं दिखा सकी। तुम वैसे ही सदाचारी और धार्मिक बने रहे। विप्रश्रेष्ठ! तुम अपने इसी शुद्ध शरीर से देवलोक में जाओ''

महामुनि दुर्वासाजी के इतना कहते ही देवदूत स्वर्ग से विमान लेकर वहां आए और उन्होंने मुद्गलजी से उसमें बैठने की प्रार्थना की। महर्षि मुद्गल ने देवदूतों से स्वर्ग के गुण-दोष पूछे और उनकी बातें सुनकर बोले- ''जहां परस्पर स्पर्धा है, जहां पूर्ण तृप्ति नहीं और जहां असुरों के आक्रमण तथा पुण्य क्षीण होने से पतन का भय सदैव लगा रहता है, वह देवलोक स्वर्ग में मैं नहीं जाना चाहता।''

आखिर में देवदूतों को विमान लेकर लौट जाना पड़ा। महर्षि मुद्गलजी ने कुछ ही दिनों में अपने त्यागमय जीवन तथा भगवद्भजन के प्रभाव से प्रभु धाम को प्राप्त किया।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

चुटकुले

1. औरंगजेब - हम क्यों नहीं ढूंढ पा रहे हैं शिवाजी को।
सेनापति - सरकार, क्योंकि हम मुगल हैं गुगल नहीं।

2. संता चोर से - अरे भाई तुम्हें शरम नहीं आती जो आगे वाले का पर्स चुरा रहे हो।
चोर - सरदार जी शर्म तो आपको आनी चाहिए जो आपकी जेब में कुछ नहीं है।

3. एक सरदार के गांव में नदी का पुल बनाया गया।
बिल्डर - बहुत अच्छा हो गया
सरदार - हां जी पहले धूप में तैर के नदी पार करते थे अब छांव में तैरकर किया करेंगे।

4. संता के बेटे का एक्सीडेंन्ट हो गया
डॉक्टर - आपके बेटे के दोनों पैर काटने पडेंगे।
संता - सर पकड़कर रोने लगा।
डॉक्टर - क्या हुआ
संता - कल ही नालायक को नई चप्पल दिलाई थी।

-प्रस्तुति : गौरव

नॉन वेज छोड़ो, ग्लोब बचाओ

आप नॉन वेज खाते हैं? अगर हां, तो क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा करके आप ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ा रहे हैं? यह बात थोड़ा अटपटी लग सकती है पर दोनों में गहरा संबंध है। हमारी टेबल पर सजा लजीज मांसाहार हमारे स्वास्थ्य पर चाहे जो प्रभाव डाल रहा हो लेकिन पर्यावरण पर तो इसका बहुत बुरा असर हो रहा है। असल में पूरी दुनिया में नॉन वेज (मांसाहार) की संस्कृति का प्रसार विश्व पर यूरोपीय वर्चस्व स्थापित करने की भावना से जुड़ा है। आर्थिक विकास और औद्योगिकरण ने पिछले दो सौ वर्षों में नॉनवेज फूड कल्चर को पॉपुलर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। विकासशील देशों ने डिवेलपमेंट व लाइफ स्टाइल के वेस्टर्न मॉडल के मोह में फंस कर इसे अपनाया है। इन देशों में जैसे-जैसे आर्थिक विकास हो रहा है वैसे-वैसे मांस व पशुपालन उद्योग फल-फूल रहा है।

उदाहरण के लिए पहले चीन में पोर्क्स (सूअर का मांस) सिर्फ वहां का संभ्रांत वर्ग खाता है, लेकिन आज वहां का गरीब भी अपने रोज के खाने में उसे शामिल करने लगा है। यही कारण है कि चीन द्वारा पोर्क्स के आयात में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। भारत में भी नॉन वेज खाना स्टेटस सिंबल बनता जा रहा है। जिन राज्यों व वर्गों में संपन्नता व बाहरी संपर्क बढ़ा है, उनमें मांस के उपभोग में भी तेजी आई है। इस कारण हमारे ट्रेडिशनल फूड की बड़ी उपेक्षा हुई है। पहले गांवों में कुपोषण दूर करने में दलहनों-तिलहनों और गुड़ की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी, लेकिन आज खेती की आधुनिक पद्धतियों व खान-पान में इन तीनों की काफी उपेक्षा हुई है।

गौरतलब है कि 1961 में विश्व की कुल मांस आपूर्ति लगभग 7 करोड़ टन थी जो 2008 में बढ़कर 28 करोड़ टन से भी ज्यादा हो गई। इस दौरान विश्व स्तर पर प्रति व्यक्ति मांस की औसत खपत दोगुनी हो गई। लेकिन गौर करने की बात है कि विकासशील देशों में यह अधिक तेजी से बढ़ी और मात्र 20 वर्षों में ही प्रति व्यक्ति खपत दोगुनी से अधिक हो गई।

इस आधुनिक पशुपालन ने प्रकृति व मनुष्य से भारी कीमत वसूल की है। इसमें पशु आहार तैयार करने के लिए रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा पानी का अत्यधिक उपयोग किया जाता है। इससे पानी का संकट, वायु व जल प्रदूषण, मिट्टी की उर्वरा शक्ति में गिरावट जैसी स्थितियां पशुपालन की मुख्य भूमिका रही है। आज दुनिया में पैदा होने वाला एक-तिहाई अनाज जानवरों को खिलाया जा रहा है, ताकि उनका मांस खाया जा सके, जबकि दूसरी तरफ भुखमरी के शिकार लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

सघन आवास, रसायनों और हार्मोन युक्त पशु आहार व दवाइयां देने से पर्यावरण और हमारे स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। पशुपालन के इन कृत्रिम तरीकों ने ही मैड

काऊ, बर्ड फ्लू व स्वाइन फ्लू जैसी नई महामारियां पैदा की हैं। मांस उत्पादन में खाद्य पदार्थों की बड़े पैमाने पर बर्बादी भी होती है। एक किलो मांस पैदा करने में 7 किलो अनाज या सोयाबीन की जरूरत पड़ती है। अनाज के मांस में बदलने की प्रक्रिया में 90 प्रतिशत प्रोटीन, 99 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 100 प्रतिशत रेशा नष्ट हो जाता है। एक किलो आलू पैदा करने में जहां मात्र 500 लीटर पानी की खपत होती है, वहीं इतने ही मांस के लिए 10,000 लीटर पानी की जरूरत पड़ती है। स्पष्ट है कि आधुनिक औद्योगिक पशुपालन के तरीके से भोजन तैयार करने के लिए काफी जमीन और संसाधनों की जरूरत होती है। इस समय दुनिया की दो-तिहाई भूमि चरागाह व पशु आहार तैयार करने में लगा दी गई है। जैसे-जैसे मांस की मांग बढ़ेगी, वैसे-वैसे पशु आहार की खेती बढ़ती जाएगी, और इससे ग्रीनहाउस गैसों में तेजी से बढ़ोतरी होगी।

फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (एफओ) के अनुसार पशुपालन क्षेत्र वैश्विक ग्रीन हाउस गैसों में 18 प्रतिशत का योगदान करता है जो कि परिवहन क्षेत्र से अधिक है। पशुपालन के कारण ग्लोबल टेम्प्रेचर भी बढ़ा है। असल में दुनिया भर में चरागाह और पशु आहार की खेती के लिए वनों को काटा जा रहा है। एफओ के अनुसार लैटिन अमेरिका में 70 प्रतिशत वन भूमि को चरागाह में बदल दिया गया है। पेड़-पौधे कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती है जिसके कारण तापमान में भी बढ़ोतरी होती है। एनिमल वेस्टेज से नाइट्रस ऑक्साइड नामक ग्रीनहाउस गैस निकलती है जो कि कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में 296 गुणा जहरीली है। गौ पालन के कारण मिथेन का उत्पादन होता है, जो कि कार्बनडाइऑक्साइड की तुलना में तेइस गुना खतरनाक है। पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने इसीलिए कहा था कि यदि दुनिया बीफ (गाय का मांस) खाना बंद कर दे तो कार्बन उत्सर्जन में नाटकीय ढंग से कमी आएगी और ग्लोबल वॉर्मिंग में बढ़ोतरी धीमी हो जाएगी। सौभाग्य की बात है कि भारत में बीफ का ज्यादा चलन नहीं है। मांस के ट्रांसपोर्टेशन और उसे पकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले ईंधन से भी ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन होता है। इतना ही नहीं, जानवरों के मांस में भी कई प्रकार की ग्रीन हाउस गैसें उत्पन्न होती हैं जो वातावरण में घुलकर उसके तापमान को बढ़ाती है।

कोपनहेगन सम्मेलन में साफ हो गया कि कार्बन इमिशन में कटौती पर कानूनी बाध यताओं को स्वीकार करना फिलहाल संभव नहीं है। यह भी तय हो गया कि इमिशन में स्वैच्छिक कटौती तब तक संभव नहीं होगी जब तक कि जन-जन इसके लिए प्रयास न करे। इस दिशा में मांसाहार में कटौती एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। ग्रीन हाउस उत्सर्जन कम करने के अन्य उपायों की तुलना में यह सबसे आसान है।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

मासिक राशि भविष्यफल-जनवरी 2013

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो आय सामान्य रहेगी। तथा व्यय अधिक रहेगा। व्ययाधिक्य के कारण मानसिक चिंता रहेगी। सत्संग,उपासना आदि लाभप्रद रहेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह सामान्य रहेगा। पत्नी तथा संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा नहीं हे। विरोधी पक्ष कार्यों में रूकावट डालेगा। जिन्हें आप अपना समझते है वे ही अंदर खाने आपका विरोध कर सकते हैं। उत्तरार्ध में स्थिति में सुधार आयेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि होगी नई योजना बनेंगी। विरोधियों पर काबू पाने में आप सक्षम होंगे। परिश्रम तो काफी करना पड़ेगा पर अन्त में लाभ होगा समाज में यश मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा है। कार्यों में सफलता मिलेगी, किन्तु उत्तरार्ध में व्यर्थ के वाद विवाद होंगे तथा आय पर भी विपरीत असर पड़ेगा। हां अचानक कोई लाभ की स्थिति आ सकती है। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। स्वास्थ्यकी दृष्टि से यह माह सामान्यतः अच्छा है। किसी पुराने केस के निपटारे से खुशी मिलेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा रहेगा। सामान्यतः लाभ देने वाला है। मित्र बंधु मददगार रहेंगे। कोई पिछला रूका हुआ पैसा भी इस माह मिल सकता है जिससे मानसिक चिंता दूर होगी। हां प्रेम संबंधों में दरार आ सकती है। इसी कारण कोई झगडा आदि भी बन सकता है। सावधान रहें।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य फलदायक है। घर के झंझटों से ही फुर्सत नहीं मिलेगी। किसी का आप भला करना चाहेंगे तो भी बुराई ही मिलेगी। बिन मतलब के किसी के मामले में दखल न दें जब आपको कुछ न सूझे तो बुजुर्गो की सलाह अवश्य लें। अपने जीवन साथी की सलाह से भी लाभान्वित होंगे। इस माह कोई शुभकार्य आपके हाथों से हो सकता है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में लाभ देने वाला है तथा उत्तरार्ध में सामान्य फल देने वाला है। परिश्रम साध्य फल देने वाला है। कोई शुभ कार्य आपके हाथों से हो सकता हैं। बंधु-मित्र आपके शुभ कार्यों में आपका साथ देंगे। तर्क-वितर्क से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला–तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में पैसा न लगाएं। नुकसान हो सकता है। विरोधी तत्वों के सक्रिय रहने से मानसिक परेशानी रहेगी। हां सरकारी कर्मचारी अचानक लाभ की आशा कर सकते है। स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्यतः यह माह अच्छा है। परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान हो सकता है।

वृश्चिक–वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक आर्थिक लाभ की उम्मीद नहीं की जा सकती। इस संबंध में की जाने वाली यात्राएं भी शुभफल नहीं दे पायेंगी। आपसी मन मुटाव तथा कोर्ट-कचहरी की नौबत न आने दें। अपने बुजुर्गों को सम्मान दें तथा उनकी सलाह से काम करें।

धनु–धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह मास परिश्रम साध्य लाभ लिये होगा। अपनी शक्ति से अधिक न तो कार्य करें और न ही अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में धन लगाए। यही श्रेयस्कर रहेगा। आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें। मौका पाकर अपने ही धोखा दे सकते हैं। किसी पुराने केस के निपटारे से खुशी मिलेगी।

मकर–मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अन्य लाभ वाला होगा। वर्तमान में जीएं। बीती बातों को स्मरण करके परेशान होने के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। नये आगन्तुकों से मेल मिलाप में सावधानी बरतें। परिश्रम से जी न चुरायें तो अच्छा फल मिलेगा। कोई नई योजना बनेगी जिसका क्रियान्वयन आगे होगा।

कुम्भ–कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह आय से अधिक खर्च वाला रहेगा। व्यस्तता अधिक रहेगी। योजना तो कई बनेंगी किंतु उनको कार्यरूप में परिणित नहीं किया जा सकेगा। किसी अज्ञात भय के कारण मानसिक परेशानी बनेगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। शत्रु सिर उठायेंगे, किंतु वे अपना ही नुक्सान कर बैठेंगे। अपने बुजुर्गों को सम्मान दें तथा उनकी सलाह से काम करें।

मीन–मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक मेहनत करने के पश्चात भी अन्य लाभ वाला होगा। वातावरण ऐसा बनेगा कि मानसिक चिंता बनी रहेगी। कार्य पूरा होने की आशा बनेगी पर कार्य पूर्ण नहीं होगा। व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की स्थिति भी आ सकती है। कोई लंबी यात्रा का योग भी बन सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में अपकीर्ति का भय है। अपने जीवन साथी की सलाह से भी लाभान्वित होंगे। इस माह कोई शुभकार्य आपके हाथों से हो सकता है।

-इति शुभम्

धर्माचरण से होता है दैवी शक्तियों का जागरण

मानव मंदिर मिशन के 31वें वार्षिकोत्सव पूज्य आचार्यश्री का उद्‌बोधन

जीवन में धर्म के आचरण एवं अभ्यास से हमारे भीतर सोई हुई दैवी शक्तियों का जागरण होता है। परिणामतः दैवी सम्पदा सहजतया प्राप्त हो जाती है। भगवान महावीर फरमाते हैं- देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो- जिसका मन धर्म-रत है, उसे देवता भी नमन करते हैं। दैवी शक्तियां उसकी सेवा में सदा तत्पर रहती हैं- ये उद्‌गार पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने मानव मंदिर मिशन के 31वें वार्षिक समारोह में जैन आश्रम, नई दिल्ली में प्रकट किये।

आपने कहा- मेरा यह वक्तव्य केवल शास्त्र-वचन पर नहीं, किन्तु जीवंत अनुभवों की साक्षी पर आधारित है। तेरापंथ संप्रदाय से अभिनिष्क्रमण के सन् 1987 में दिल्ली आगमन हुआ। न कोई धन-पति समर्थन में हमारे साथ खड़ा था न कोई राज-नेता। कोई दैवी संयोग था जो दिल्ली महानगर के बीच मानव मंदिर केन्द्र, जैन आश्रम के लिए अनायास यह विशाल भूमि प्राप्त हो गई। इधर-उधर से सहयोग के हाथ जुड़ते गए। आश्रम का भवन बना। किंतु इस जंगल में सबसे बड़ी समस्या पीने लायक पानी की थी। बोरिंग का पानी पूरी तरह दूषित था। जल बोर्ड की पाइप लाइन करीब एक माइल की दूरी पर थी। ऐसी स्थिति में पेय-जल के अभाव में आश्रम-भवन में आवास होना कैसे संभव हो पाता।

सन् 1993 में पूज्या मातुश्री का दीक्षा-संस्कार हुआ। कार्यक्रम के पश्चात् हम आठ-दस व्यक्तियों के बीच पेय-जल की समस्या के हल पर चिंतन कर रहे थे। उन भाइयों के मध्य एक सर्वथा अपरिचित चेहरा भी था। उसने कहा- आप अपने आश्रम से पौने इंच का पाइप जल बोर्ड की पाइप-लाइन तक बिछवा दें। उसके पश्चात् इस फोन नम्बर पर मुझे सूचित कर दें। मैं जल-बोर्ड में हूँ। आपको पेय-जल का कनेक्शन मिल जाएगा।

उस व्यक्ति के निर्देश के अनुसार आश्रम से जल-बोर्ड की पाइप लाइन तक पौने इंच का पाइप डाल दिया गया। उस व्यक्ति को इसकी जानकारी दे दी गई। उसने कहा- उस स्थल तक आपका कोई व्यक्ति नहीं आए। आपको कनेक्शन मिल जाएगा। थोड़ी ही देर में आश्रम में पानी आ गया। बहुत बड़ी समस्या हल हो गई।

इतनी बड़ी सेवा के लिए उस व्यक्ति को धन्यवाद-ज्ञापन हेतु उससे संपर्क करने की कोशिश की गई। उस फोन नम्बर पर कोई भी उपलब्ध नहीं। जल-बोर्ड के ऑफिस में संपर्क करने पर उत्तर मिला- इस नाम का व्यक्ति हमारे ऑफिस में कोई है ही नहीं। पता लगाने की और भी कोशिश की गई। किंतु उसका कोई अता-पता आज तक भी नहीं चला। यहां यह प्रश्न होता है आखिर वह व्यक्ति कौन था?

आपने कहा- एक नहीं, दैवी सहयोग के ऐसे अनेक घटना-प्रसंग मेरी आंखों के सामने हैं। सन् 1995 में एक बार रात्रि में अचानक मीटर-बोर्ड में आग लग गई। लपटें उठने लगीं। 100 नम्बर पर फोन करके पुलिस को बुलाया गया। पुलिस ने फायर-ब्रिगेड को बुलाया। इलेक्ट्रिशियन ने बाहर से वायर कनेक्शन काटा। फायर-ब्रिगेड ने जल-धार से आग बुझाई। वायर-सिस्टम के जल जाने में कोई संशय नहीं था। दूसरे दिन इलेक्ट्रिशियन को पूरा सिस्टम जांचने कि लिए बुलाया गया। सब तरह से जांच करने के बाद इलेक्ट्रिशियन खुद हैरान था। पूरा वायर-सिस्टम जस-का-तस था। जबकि आग के समय वह स्वयं हाजिर था। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। किन्तु हकीकत उसके सामने थी। कनेक्शन वापस जोड़ने के सिवा उसे कुछ भी नहीं करना पड़ा। प्रश्न फिर वही है आग लगना, पुलिस का आना, फायर-ब्रिगेड द्वारा आग को बुझाना- इन सबके बाद कुछ भी नहीं जलना, आखिर यह सब क्या था? जैसा मैंने कहा- ऐसे अनुभव जीवन में बार-बार हुए हैं, जिनको एक मुक्तक में मैंने यों अभिव्यक्ति दी है-

लगता है हर बार मुझे वह झेल रहा है
मेरे भीतर-बाहर वह ही फैल रहा है
नयनों के सागर में मेरा ज्योति-पुरूष वह
लहरों के संग आंख-मिचौली खेल रहा है।

पूज्यवर ने वक्तव्य को नया आयाम देते हुए कहा- मेरा विश्वास है जो भी व्यक्ति विशुद्ध भक्ति और विशुद्ध धर्म-आराधना करता है, उसे ऐसे दैवी अनुभव अवश्य होते हैं। विशुद्धता से मेरा यहां प्रमुख संकेत पंथ, संप्रदाय और संघ-मुक्त चेतना से है। वास्तविकता यह है धर्म के नाम पर चलने वाले अपने-अपने अहंमूलक आग्रह और मान्यताएं भक्ति और आराधना की विशुद्धता को ही विनष्ट कर देते हैं। संप्रदाय-ग्रस्त चित्त भक्ति और आराधना का स्वाद कैसे चख सकता है। मुख में नमक की डली रखकर चींटी चीनी का मिठास कैसे पा सकती है। एक तथ्य पर गौर करें। धर्म और पंथ/संप्रदाय दोनों की मनो-भूमि बिल्कुल विपरीत हैं। धर्म का संदेश वीतरागता है। संघ और संप्रदाय की नींव ही राग-द्वेष पर खड़ी होती है। धर्म दुश्मन से भी प्रेम करने को कहता है। संघ और संप्रदाय अपने संकीर्ण हितों के लिए भाई-भाई और दोस्त-दोस्त के बीच भी दीवार खड़ी कर देते हैं।

हमारी लगभग मनः स्थिति यह है हमारा चित्त किसी-न-किसी मान्यता विशेष से, किसी-न-किसी पंथ या संप्रदाय-विशेष से अथवा किसी-न-किसी परंपरा या सिद्धान्त विशेष से धारणा-ग्रस्त होता है। उस स्थिति में हम आराधना या साधना उस संघ या पंथ या संप्रदाय

की करते हैं, विशुद्ध धर्म की नहीं। मेरा निवेदन है सबसे पहले चित्त को मुक्त करें इन सारे संघ-संप्रदायों की बेड़ियों से, मान्यताओं/सिद्धान्तों और परंपरागत विधि-विधानों के संस्कारों से। इन सबसे मुक्त होकर विशुद्ध निर्मल चित्-धारा के प्रति द्रष्टा बन जाएं, दैवी शक्तियां का जागरण स्वयं हो जाएगा, दैवी संपदा हर कदम पर आपके साथ खड़ी होगी-

पंथ की नहीं, संत की बात कीजिए
वैर-विरोध के अंत की बात कीजिए
मजहब बना देता है जीवन को पतझर
अब हंसते-खिलते बसंत की बात कीजिए।

मानव मंदिर मिशन की स्थापना के पीछे यही उद्देश्य है। सारे विचारों/विकारों और मत-मतान्तरों से खाली करें मन को, आप स्वयं मंदिर बन जाएंगे, भीतर की दैवी शक्तियां स्वयं प्रकट हो जाएंगीं।

मानव मंदिर मिशन का भावी स्वरूप

पूज्य आचार्यवर ने कहा- मेरे सामने मानव मंदिर मिशन के भावी स्वरूप को लेकर कई बार प्रश्न आते हैं। इस अवसर पर उसके बारे में कुछ संकेत देना चाहूंगा। जैसा इसके नाम से स्पष्ट है हम इसे मिशन के रूप में आगे बढ़ाएंगे- जैसे चिन्मय मिशन, रामकृष्ण मिशन। घर-परिवार से मुक्त संन्यासी अपनी आत्म-साधना और योग-ध्यान अभ्यास के साथ-साथ समाज-सेवा और शिक्षा प्रकल्पों में सक्रिय भाग ले सकेंगे। इस दिशा में अभी काफी होम-वर्क बाकी है। अतः यथा समय इसका निश्चित स्वरूप समाज के समक्ष आ पाएगा। अभी इतना इशारा काफी है।

दूसरी प्रचारक-श्रेणी होगी। घर-परिवार से युक्त होते हुए भी जो अपना जीवन मिशन को समर्पित करेंगे वे इस श्रेणी में आएंगे। योग-प्राणायाम, ध्यान, मंत्र तथा आयुर्वेद आदि में वे निष्णात होंगे। इस दृष्टि से कुछ प्रचारकों का प्रशिक्षण भी चल रहा है। डॉ. सोहनवीर ने पिछले वर्षों में यूरोप के कई देशों में इस दृष्टि से प्रभावी कार्य किया है। सैंकडों विदेशी लोग मानव मंदिर मिशन से जुड़े हैं। इसी तरह श्री अरूण योगी (तिवारी) ने मेरी अमेरिका-यात्रा में न्यूयार्क, न्यूजर्सी, वरमोन्ट आदि स्टेटों में योग प्राणायाम मंत्र तथा ध्यान-कक्षाओं द्वारा व्यापक प्रभाव छोड़ा है। इन दोनों को विदेश में मिशन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इस प्रसंग पर मैं विशेष आशीर्वाद देता हूं। दोनों ने नत-मस्तक होकर पूज्यवर के निर्देश को स्वीकार किया। आचार्यवर ने कहा- इस प्रचारक-श्रेणी में चयनित व्यक्तियों की विधिवत् संस्कार-दीक्षा के बाद उन्हें योगी शब्द दिया जाएगा।

आपने कहा-इस मिशन के साथ प्रेम और श्रद्धा से जुड़े लोगों का मानव मंदिर परिवार के रूप संगठन होगा। इस दृष्टि से पिछले वर्ष हमने समाज के वरिष्ठ श्रावक सूझबूझ के धनी श्री सुधीर चन्द्र जैन को जिम्मेवारी दी थी कि मानव मंदिर परिवार की व्यवस्थित परिकल्पना तैयार करके वे समाज के समक्ष रखें। उन्होंने बड़े चिंतन-मनन के पश्चात् मानव मंदिर मिशन की आर्थिक सुदृढता तथा मानव मंदिर परिवार की संघटना का प्रारूप तैयार किया। दुःखद संयोग-वशात् आज वे हमारे बीच नहीं हैं। उस प्रारूप में उन्होंने मानव मंदिर अक्षय कोष का संकल्प तथा उस अभियान में सहयोगी व्यक्तियों के समूह का नाम मानव मंदिर परिवार रखने का सुझाव रखा। उनके द्वारा संकल्पित योजना का प्रारूप अभी आपके समक्ष प्रस्तुत होने वाला है।

आपने मिशन के प्रवक्ता के रूप में डॉ. विनीता गुप्ता के नाम की घोषणा करते हुए कहा- आप पिछले कई वर्षों से मिशन से जुड़ी हैं। आपने हमको, साधु-साध्वी-समुदाय तथा मिशन द्वारा संचालित शिक्षा, सत्संस्कार तथा सेवामयी प्रवृत्तियों को खूब जांचा/परखा है। आप द्वारा हमारे जीवन पर आधारित उपन्यास- 'हंस अकेला' की समाज तथा साहित्य-जगत में अच्छी चर्चा रही है। समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित सभाओं/गोष्ठियों में विनीता जी हमारा अधिकृत प्रतिनिधित्व करेंगी। विनीता जी ने इस पर अपनी मानसिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए देश-विदेश में व्यापक रूप से मिशन का संदेश पहुंचाने का संकल्प प्रकट किया।

अपने प्रवचन का उपसंहार करते हुए पूज्यवर ने फरमाया- पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी, मातृ-तुल्या साध्वी चांदकुमारी जी तथा अन्य साधु-साध्वियों की सेवाओं तथा आप सबके प्रेम, सद्भावनापूर्ण सहयोग से यह मिशन एक ठोस दिशा में अपने कदम आगे बढ़ा रहा है इसकी मुझे प्रसन्नता है। कोई भी सांप्रदायिक ताकत लाख कोशिश करे आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर बढ़ते मिशन के कदमों को कोई रोक नहीं सकता। समय-समय पर संघ-निष्ठा के नाम पर जारी किये जाने वाले फत्तवों के बारे में इतना ही कहना चाहूंगा-

जिन्हें चलना है वे चलते रहेंगे
जिन्हें फलना है वे फलते रहेंगे
उन्हें चलते और फलते देखकर
जिन्हें जलना है वे जलते रहेंगे।

मानव मंदिर मिशन को संन्यास की नई अवधारणा के साथ शिक्षा-सेवा का प्रभावशाली

मिशन बनाना ही हमारा उद्देश्य है। हमारा सौभाग्य है दैवी संपदा का आशीर्वाद तथा आप सबका प्रेम और श्रद्धा-सहयोग हमारे साथ है। उपस्थित विशाल जन-समुदाय ने हर्ष और उल्लास के साथ पूज्यवर के प्रेरक उद्बोधन का स्वागत किया।

समारोह का शुभारंभ पूज्यवर के मंगल मंत्रों से हुआ। श्रीमती सुवटीबाई दूगड़, श्रीमती विमला चोपड़ा, श्रीमती रेणु जैन तथा श्रीमती मंजुबाई जैन द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन के पश्चात् साध्वी कनकलताजी, समतीश्रीजी, वसुमतीजी, तथा पदमश्रीजी ने संकल्प-गीत का संगान किया। पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री ने अपने प्रेरणादायी प्रवचन में कहा- पूज्य गुरूदेव की दूरदर्शी सोच में से यह मानव मंदिर मिशन प्रकट हुआ है जो आज समाज में शिक्षा-सेवा और सत्संस्कारों की त्रिवेणी बहा रहा है। इसमें जी भर कर डुबकी लें और अपने को पावन बनाएं। पूज्यवर का यह असांप्रदायिक शिक्षा तथा सत्संस्कारों का संदेश घर-घर पहुंचे, हमें ऐसा प्रयास करना है।

विशिष्ट अतिथि भूतपूर्व मेयर श्री फरहाद सूरी ने अपने मर्मस्पर्शी भाषण में पूज्यवर के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए कहा- मेरी अम्माजी श्रीमती ताजदार बाबर दिन में पांच बार नमाज अदा करती हैं। उसके भी दिल में आप मुनिवर के लिए इतनी इज्जत है कि मस्जिद जाएं न जाएं, मानव मंदिर अवश्य आती हैं।

दक्षिण दिल्ली नगर निगम की मेयर ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा- बेसहारा बच्चों के लिए इतना बड़ा सेवा-कार्य यहां हो रहा है, इसका मुझे अनुमान नहीं था। इस मिशन के लिए जो भी कर सकूंगी, अपना सौभाग्य समझूंगी। इसका अप्रोच रास्ता पक्का बन जाए और उसका नामकरण आचार्यश्री के नाम पर हो, ऐसा मेरा प्रयास रहेगा। नगर-पार्षद् श्रीमती सिम्मी जैन ने मानव मंदिर की अभिनव परिकल्पना के लिए पूज्य गुरूदेव का अभिवादन किया।

न्यूयार्क, अमेरिका से समागत जैन समाज के वरिष्ठ नेता श्री आनन्द नाहर ने इस वर्ष की आत्म-स्पर्शी पयुर्षण-आराधना तथा अरूण जी तिवारी की प्रभावशाली योग-कक्षाओं पर अपने विचार प्रकट किये।

इस प्रसंग पर ज्योतिष तथा यज्ञ-अनुष्ठानों द्वारा समाज सेवा में सुप्रतिष्ठित श्री दीक्षितजी महाराज का सम्मान समाज-सेवी श्री प्रदीपजी मल्होत्रा ने शाल ओढा कर किया। उल्लेखनीय है श्री दीक्षितजी महाराज पूज्य गुरूदेव के साथ अनन्य प्रेम और श्रद्धा से जुड़े हैं।

मानव मंदिर अक्षय कोष अभियान का आरंभ

मिशन की प्रगति और ठोसता के लिए आह्वान करते हुए समाज-सेवी श्री शंकर गोयन्का ने कहा- हमारे सामने मिशन के व्यवस्थित संगठन तथा आर्थिक सुदृढता दोनों पर एक

निश्चित निर्णय लेने का समय आ गया है। इस दृष्टि से मानव मंदिर अक्षय कोष की प्रस्तावना आपके समक्ष रख रहा हूं। इस अक्षय कोष में दान-दाताओं की पांच श्रेणियां होंगी। आजीवन-5100/-, संरक्षक-11000/-, विशिष्ट संरक्षक-21000/-, परम संरक्षक-51000/- तथा संरक्षक शिरोमणि एक लाख रूपयों का अनुदान करने वाले होंगे। इस अक्षय कोष से अर्जित आय का उपयोग मानव मंदिर मिशन के शिक्षा-सेवा कार्यों में होगा। इन दान-दाताओं का पहला सम्मेलन पूज्य आचार्यश्री की जन्म-तिथि 22 सितम्बर, 2013 का दिन प्रस्तावित है। इन सदस्यों का संगठन ही मानव मंदिर परिवार कहलाएगा, जिसके कार्यकारी स्वरूप का निर्णय उस सम्मेलन में तय होगा। यहां मैं यह भी बताना चाहूंगा आप द्वारा प्रदत्त दान इन्कमटैक्स की धारा 80जी तथा 35ए.सी. द्वारा कर-मुक्त होगा। मेरा आप सबसे अनुरोध है पूज्यवर के इस असांप्रदायिक शिक्षा-सेवा यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति अवश्य डालकर मिशन को मजबूती प्रदान करें।

श्री गोयन्काजी के भावपूर्ण अनुरोध का जोशीले अंदाज में समर्थन करते हुए समाजसेवी श्रीमती मंजुबाई जैन ने कहा- पूज्य गुरूदेव ने बेसहारा बच्चों को गुरूकुल के द्वारा जो उन्नत शिक्षा, योगाभ्यास तथा उन्नत संस्कार प्रदान किये हैं, जैन समाज ही नहीं, पूरे धर्म-जगत के समक्ष एक अनूठा उदाहरण है। इसको मजबूती प्रदान करना हमारा परम कर्तव्य है।

सुखद आश्चर्य यह है उपस्थित जन-समुदाय ने इस अभियान का आशातीत स्वागत किया। अपना-अपना उदार सहयोग देने वालों दान-दाताओं में जैसे होड़-सी लग गई। एक-एक कर तेतीस नामों की घोषणा तो संरक्षक-शिरोमणि श्रेणी में ही हुई। इसके साथ ही अन्य श्रेणियों में भी करीब पचहत्तर नामों की घोषणाएं हुई। विशेष यह है इस अक्षय कोष अभियान के लिए सबके मुख पर स्वागत और प्रसन्नता तैर रही थी। कुछ लोगों को यह कहते भी सुना गया, इस अभियान का आरंभ कुछ वर्षों पहले ही समाज के समक्ष आ जाना चाहिए था।

आकर्षक योग-प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

समारोह का प्रमुख आकर्षण था गुरूकुल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत होने वाला योग-प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम। इसकी शुरूआत जब तीन वर्षीय बालक उत्सव ने शंख-ध्वनि से की, जन-समुदाय ने तालियों से जोरदार स्वागत किया। नन्हे-नन्हे बच्चों ने जब मां की ममतामयी भूमिका का अभिनय गीत के इन बोलों- पास बुलाती है, कितना रूलाती है, याद तुम्हारी जब-जब मुझको आती है ओ माँ... से किया तो सैंकड़ों-सैंकड़ों दिलों का भीतर से हिला कर रख दिया।

गुरूकुल के छात्रों द्वारा स्वयं तैयार किये मंदिराकार, कमलाकार तथा मयूर-आकार में योगासनों की प्रस्तुतियां दी गई तो दर्शक-गण दांतों तले अंगुली दबाने को मजबूर हो गए। इसी कार्यक्रम में बालिकाओं द्वारा देश-भक्ति का गीत- ऐ मां तुझे सलाम, बड़े छात्रों द्वारा- फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी आदि सांस्कृतिक अभिनय प्रस्तुत कये गए।

साध्वी समताश्री जी ने बच्चों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का जिक्र करते हुए लोकसभा-अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के साथ अभी-अभी संसद् भवन में हुए मधुर मिलन के बारे में बताया।

समाज-सेवी श्री प्रदीप मल्होत्रा ने गुरूकुल के बच्चों के सहायतार्थ चलने वाले सेवा-धाम हॉस्पिटल की चिकित्सा-सेवाओं के बारे में बताया। व्यवस्थापक अरूण-तिवारी ने सबका धन्यवाद करते हुए सभी से प्रसाद ग्रहण का अनुरोध किया।

इस समारोह में उपस्थित सम्माननीय अतिथि मलेशियन उच्चायुक्त श्री एच.ई. दातो तानसेन सुंग तथा साउथ अफ्रीका उच्चायुक्त श्रीमती डेबोरा एम. बालातसेंग ने भाषा न समझते हुए खूब आनंद लिया। इस प्रकार मानव मंदिर मिशन का 31वां अधिवेशन भावी दिशा तथा प्रबन्धन के अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ भारी उत्साहवर्धक वातावरण में संपन्न हुआ।

आवां उपन्यास पर चर्चा-गोष्ठी

सुप्रसिद्ध कथाकार/उपन्यासकार चित्राजी मुद्गल का बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' पर एक विशेष चर्चा-गोष्ठी पूज्य गुरूदेव के सान्निध्य में जैन आश्रम मंदिर में 18 दिसम्बर 2012 को महिला साहित्यकारों की प्रतिनिधि संस्था चेतनामयी की ओर से रखी गई। यशस्वी कथाकार श्री हिमांशु जोशी ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। उपस्थित अनेक समीक्षाकारों ने उपन्यास के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। पूज्यवर ने अपने वक्तव्य में कहा- अतः परिवर्तन के बिना कोई भी व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। श्रोताओं के आग्रह पर आपने कुछ कविताएं भी सुनाई। श्री जोशी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा- तमस् के खिलाफ उठी एक आवाज की चिनगारी भी भयंकर शोला बनते देर नहीं लगती। श्रीमती चित्राजी ने कहा- आवां में मैंने साधारण जन के बजूद के सामने आज जो चुनौतियां हैं, उनको पूरी तरह उजागर करने की कोशिश की है। चेतनामयी की सभी बहनें आश्रम की प्रवृत्तियों तथा प्रसाद पर आनंदित/प्रफुल्लित थीं।

श्रीमती कमलाबाई अग्रवाल का स्वर्ग-वास

भक्ति परायण श्रीमती कमलाबाई अग्रवाल, धर्म पत्नी स्वर्गीय मांगेरामजी अग्रवाल का स्वर्गवास 6 दिसम्बर 2012 माध्यान्ह कोलकाता में हो गया। वे अस्सी वर्ष की थी। पिछले कुछ अर्से से असाध्य बीमारी ने उन्हें घेर रखा था। किन्तु देहावसान के दिन बिल्कुल शांत थीं। सबेरे से उनके मुख पर राम का नाम था। प्रभु-नाम रटते-रटते ही उन्होंने प्राण छोडे। सभी धर्मों का मानना है अंतिम समय में प्रभु का नाम किसी भाग्यशाली के मुख पर ही होता है। और उस व्यक्ति की गति स्वर्गारोहण ही होती है।

सन् 1989 में दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री से आपका संपर्क आपके भ्राता श्री द्वारका प्रसाद जी राजलीवाल के माध्यम से हुआ। वे दिल्ली पश्चिम विहार, भेरा एन्कलेव में अपने छोटे पुत्र श्री महेन्द्रजी अग्रवाल के साथ रहती थी। उसके बाद पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री के साथ पूरा परिवार पूरी श्रद्धा-भावना से जुड़ गया। पिछले कुछ वर्षों से वे अपने बड़े पुत्र श्री राजेन्द्रजी अग्रवाल के पास कोलकाता में थी। पिछली बार पूज्यवर के कोलकाता पदार्पण पर उन्होंने अपने आवास पर प्रवचन भी रखा। उनकी स्मृति में पूरे परिवार को धर्म-संबल प्रदान करते हुए पूज्य गुरूदेव ने कहा- मातृ-वियोग की इस घड़ी में आपको धर्म और धीरज को धारण करना है। बहुत हिम्मत और हौसला वाली वे थी। भाग्यशाली तो थी ही, तभी तो राम-नाम रटते-रटते प्राणों को छोड़ा। परिवार-सुख की दृष्टि से दोनों पुत्र तथा चारों पुत्रियों का भरा-पूरा सुखी-परिवार वे छोड़कर गई है।

आपने कहा- हमारे मिशन के महत्त्वपूर्ण अध्याय श्रीमती कमलाबाई के दिल्ली-आवास के साथ जुड़े हैं। पहली बार अमेरिका की विदेश-यात्रा वहीं से हुई थी। जैन आश्रम के लिए दिल्ली में विशाल भूमि की उपलब्धि भी आपके आवास पर ही हुई थी। इस आश्रम-भूमि के लिए आपकी पहली प्रतिक्रिया थी यह जमीन आपके लिए बहुत शुभ रहेगी। उनके विश्वास के अनुरूप आज आश्रम का विकास-विस्तार सबके सामने है। आश्रम के साथ आरंभ से आज तक परिवार की सेवायें जुड़ी हुई हैं। परिवार के सभी सदस्यों का कर्तव्य है उनके यश को ऊँचाइयों तक ले जाएं। अपनी मां कमलाबाई की श्रद्धा-भावना की तरह पूज्य गुरूदेव तथा मानव मंदिर मिशन से आप जुड़े रहें।

दिवंगत आत्मा के प्रति जैन आश्रम, मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की भाव भीनी श्रद्धांजलि।

संरक्षक शिरोमणि श्रीमती सुवटी बाई दूगड़ का देवलोक-गमन

स्व. श्री शुभकरण दूगड़ की धर्म पत्नी संरक्षक शिरोमणि श्रीमती सुवटी बाई दूगड़ का स्वर्गारोहण अचानक 22 दिसम्बर 2012 को धरान नेपाल में हो गया। वे 79 वर्ष की थी। विशेष यह है आप पूज्य आचार्य श्री रूपचन्द्रजी की गृहस्थाश्रम की बड़ी सगी बहन थी। पूज्यवर के गृहस्थाश्रम में आठ भाई बहनों में आपका तीसरा नम्बर था। आप ज्यादा पढ़ी लिखी न होने पर भी निर्मल बुद्धि की धनी थी। नाम-दिखावे से दूर सहज धर्म-परायण जीवन जीनेवाली थी। प्रबल पुण्यशाली थी। श्री दूगड़ जी पूज्य गुरूदेव से कहते थे आपकी बहन के घर पर आने के बाद मैंने आर्थिक समृद्धि तथा परिवार सुख की दृष्टि से कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपके तीन पुत्र श्री हेमराज, श्री हरीश तथा श्री सूरज तथा तीन पुत्रियां श्रीमती विमला बाई, श्रीमती पुखराज बाई जी तथा श्रीमती सुनीता बाई जी-सभी उन्नत संस्कारवान, परस्पर प्रेमल तथा समाज के प्रतिष्ठित घरानों से जुड़ी हैं। यह सब श्री दूगड़ जी तथा श्रीमती सुवटी बाई जी जैसे माता-पिता के शिक्षाओं का ही परिणाम है।

पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री के मानव मंदिर मिशन के साथ आप तन मन धन से सदैव जुड़ी रहीं। इस बार मानव मंदिर अक्षय कोष योजना में एक लाख रूपये की सदस्यता संरक्षक शिरोमणि के रूप में सबसे पहला नाम आपका ही रहा। बहुत निडर और स्वाभिमान थी। संघ-संप्रदायवाद से कोसो दूर थीं। सदा एक ही बात कहती- हर संत के लिए मेरे दरवाजे खुले हैं। पूज्य गुरूदेव, पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री तथा सरलमना मंजुश्री जी तथा साध्वी चांदकुमारीजी, सौरभ मुनि आदि सभी साधु-साध्वियों के प्रति उनके मन में खूब श्रद्धा-प्रेम था। पूजनीया मातुश्री के स्वर्ग-वास के बाद इन वर्षों में परिवार के लिए वे मां की भुमिका निभाती। गुरूकुल के संस्कारवान् बच्चों के प्रति उनके मन में बहुत आदर था। उनका मानना था- भवन-निर्माण में दान देने की अपेक्षा ऐसे जरूरतमंद बच्चों के जीवन-निर्माण में सहयोग करना अधिक श्रेष्ठ है। आज उनके अचानक निधन से परिवार, समाज तथा मानव मंदिर गुरूकुल के लिए एक अभाव पैदा हो गया है। अपने स्मृति-संदेश में पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री ने कहा- ऐसे माता पिता पुण्य - योग से मिलते हैं। इस कठिन घड़ी में मोह-शोक से दूर रहते हुए उनके गुणों-विशेषताओं का स्मरण करें। उनके यश-कीर्ति को आगे बढ़ाएं तथा उनकी इच्छा के अनुरूप मानव मंदिर मिशन के शिक्षा, सत्संकार तथा सेवा कार्यो को मजबूती प्रदान करें। दिवंगत आत्मा की शांति, सद्गति तथा बन्धन मुक्ति की कामना के साथ जैन आश्रम, गुरूकुल तथा रूपरेखा-परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

-आवाँ पुस्तक गोष्ठी में पूज्य गुरूदेव अपने विचार प्रकट करते हुए। उपन्यास की लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल, यशस्वी कथाकार श्री हिमांशु जोशी व अन्य।

-दक्षिण दिल्ली नगर निगम की मेयर श्रीमती सविता गुप्ता अपने विचार प्रकट करते हुए। पास में हैं श्री अरूण तिवारी।

-दीप-प्रज्ज्वलन करते हुए (बायें से) श्रीमती सुवटी बाई दूगड़, श्रीमती विमला चोपड़ा, श्रीमती रेणु जैन तथा मंजुबाई जैन।

-समारोह में (दायें से) श्रीमती मंजुबाईजी, डॉ. विनीताजी, (दूसरी पंक्ति में दायें से) श्री पी.सी. चतुर्वेदी जी, श्री साहनी जी, श्रीमती कुसुमवीर, तथा श्रीमान ललित कपूर जी।